ISSN: 0972 - 2351

मत्स्यगंधा

2007

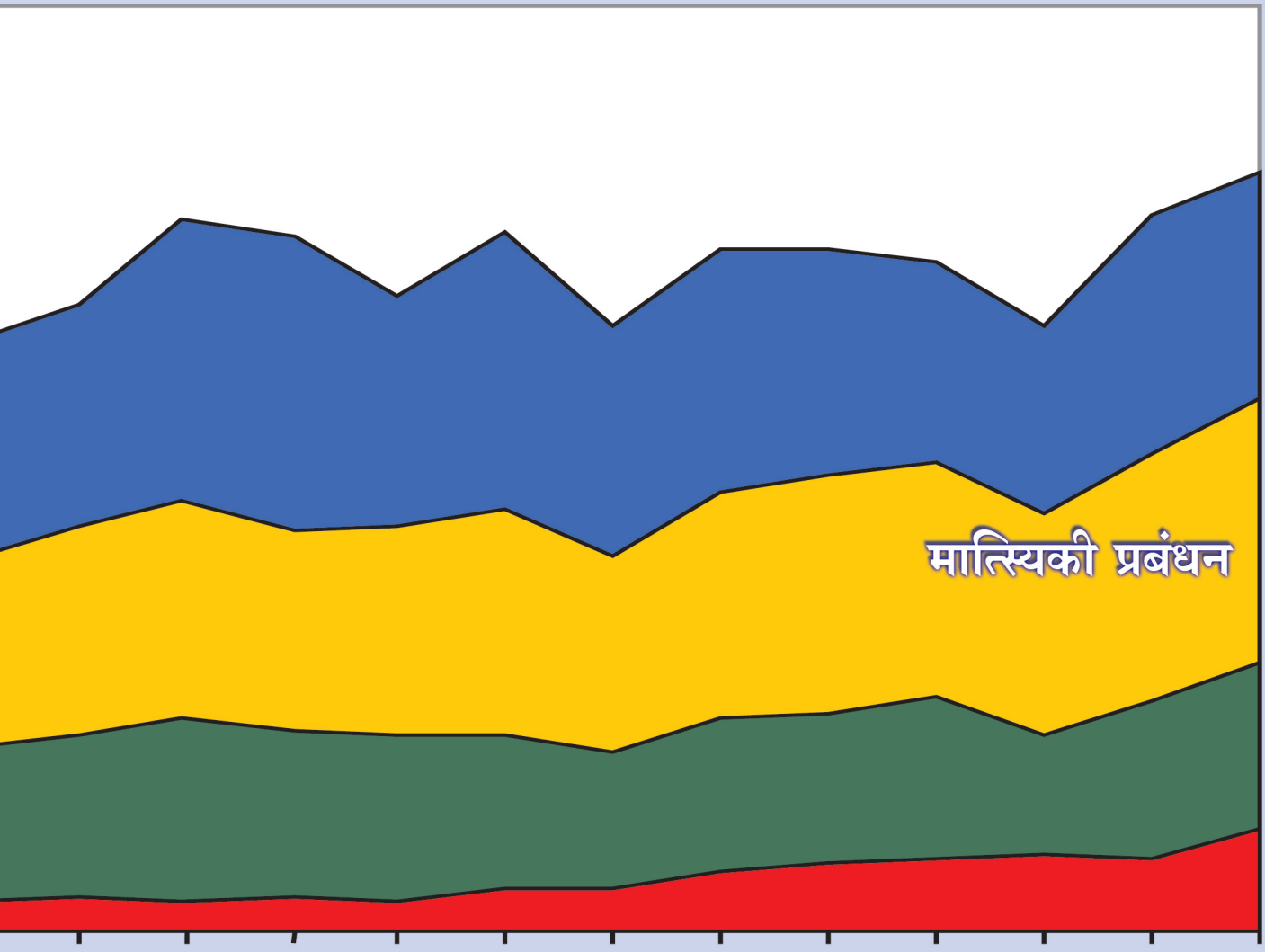

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान
(भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद)
कोची 682 018

चेन्नई समुद्र तट की निम्न मूल्य उप पकड

एस. लक्ष्मी पिल्लै, शोभा जो किषकूडन, पी. तिरुमिलू, एस. गोमती और पी. पूवण्णन
सी एम एफ आर आइ का मद्रास अनुसंधान केन्द्र, चेन्नई

पिछले तीन दशकों में चेन्नई के समुद्र तट से लक्षित जातियों का अत्यधिक अवतरण हुआ है। मछली रासायनिक सत्व अथवा प्रोटीन की बढती हुई मांग के कारण, दोनों, घरेलू एवं अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों में प्रमुख वर्ग जैसे झींगों की घटती एवं वो मछली जातियाँ जो लक्षित मत्स्यिकी को बनायी रखती हैं, उनका बढाव देखने को मिला है। बीस या तीस साल पहले, महाजाल का प्रयोग खासकर झींगा, उच्च मूल्यवाले सेफालोपोड और कुछ खास मछलियों के वर्ग, जैसे पोम्फ्रेट का ही विदोहन के लिए किया जाता था। आजकल यही महाजाल में विभिन्न अन्य प्रकार की मछली, जैसे करान्जिड्स, क्लूपिड्स, थ्रेडफिनब्रीम्स, छोटे पर्च एवं छोटे हांगर भी पकडा जा रहा है।

चेन्नई के मत्स्यन बन्दरगाह में औसत 65-70% वार्षिक अवतरण महाजाल से प्राप्त उप पकड है, जो अलक्षित वर्गों से संगठित हैं। इनमें 15-20% निम्न मूल्य उप पकड है। निम्नमूल्य उप पकड को इस प्रकार परिभाषित किया गया है - पकड जो बाजार में बेचने लायक नहीं है, या वो पकड जो ठिगना या निकृष्ट मछलियों के दल से बना हो, जिनका कोई बाजारी मूल्य नहीं है। महाजाल से प्राप्त पकड यदि बुरे निर्वाह और बुरी सुरक्षा सुविधाओं के कारण क्षतिपूर्ण हो, तो उन्हें निम्न मूल्य उप पकड की श्रेणी में डाला जाता है। चेन्नई समुद्र तट में लगभग 2000-3000 टन निम्न मूल्य उप पकड का अवतरण होता है, जिसमें 60% मछलियाँ, 30% क्रस्टेशियाई संपदा, 8% मृदुकवची जानवर और 2% एक्कैनोडर्म से संगठित है। इसके अलावा बहुदिनीय महाजाल संक्रिया के समय बहुत अधिक प्रमात्रा में मछलियों को नौकाओं से ही फेंक दिया जाता है।

निम्न मूल्य उप पकड विश्व की कई मात्स्यिकी में एक महत्वपूर्ण समस्या है, क्योंकि, इस उप पकड में वाणिज्य प्रधान मछलियों और कवचप्राणियों की किशोर अवस्था भी शामिल होता है। इनके पकडने से अति मत्स्यन से विकास में बाधा या "ग्रोथ ओवरफिशिंग" में परिणामित होता है। इस कारण उस प्राकृतिक संचय के हिस्से में घाटा होने की संभावना है, जो पूर्ण विकसित और कम से कम एक बार प्रजनन करने के योग्य हो सकता है।

चेन्नई की निम्न मूल्य उप पकड का जाति संयोजन

मछलियाँ

मछलियों का मुख्य वर्ग जो निम्न मूल्य उपपकड के रूप में चेन्नई में अवतरित होता है, वे हैं - सिल्वरबेल्लीस (25-30%), कार्डिनल मछली (20-25%), फ्लाट फिश (8-10%), स्कोरपियोन फिश (6-8%), लिसार्ड फिश (4-6%), वैट बेट (5-6%), ऐंचोवीस (6-7%), करन्जिड्स (3-4%), थ्रेडफिन और मोनोकल ब्रीम्स (3-5%), पफर फिश (3-4%), ग्लास ऐस् (2-3%), रेस (1-2%), ईल्स (1-2%), फ्लाइ फिश (1-2%) गोट फिश (1-2%) इत्यादि।

पत्रव्यवहार : डॉ. एस. लक्ष्मी पिल्लै, वैज्ञानिक वरिष्ठ स्केल, सी एम एफ आर आइ का मद्रास अनुसंधान केन्द्र, 75, सानतोम हाइ रोड, राजा अण्णामलैपुरम, चेन्नई, 600 028, तमिलनाडु

क्रस्टेशियायी संपदा

निम्न मूल्य उप पकड में क्रस्टेशियायी संपदाओं में कर्कट 52.5% से प्रबल है, जिसके बाद आते हैं स्टोमाटोपोड्स (22%), झींगा (18.3%) और महाचिंगट (7.2%)। अवतरण में मौजूद मुख्य कर्कट जातियों में किशोर अवस्था के वाणिज्यक प्रधान *पोर्टूनस सान्विनोलेन्टस*, *पी. आर्जन्टियस*, *पी. ग्लेडियेटर*, *चारिब्डिस लूसिफेरा* और *सी. होप्नैटस* है। दूसरे कर्कट जो निम्न मूल्य उप पकड में मिलता है, वे है - *कनाप्पातियाँ*, *डोरिप फ्रस्कोण*, *अर्केनिया हेप्टाकान्ता*, *लैयागोर रूब्रोसाक्यूलेटा*, इत्यादि। किशोर अवस्था और चोट पहूँचाए प्रौढ *मेटापिनेयोप्सिस स्ट्रिड्यूलेन्स* और *पारापिनेयस लोन्जिपस* भी निम्न मूल्य उप पकड में पाये जाते हैं। स्टोमाटोपोड एक और मुख्य वर्ग है जिनकी कई जातियाँ निम्न मूल्य उप पकड में प्राप्त हैं - *ओरेटोस्क्विल्ला नीपा*, *ओ. वुड्मेसोनी*, *ओ. गोनिप्टिस*, *हार्पियोस्क्विल्ला हार्पक्स*, *एच. अनन्डली*, *एच. राफिडे*, इत्यादि। निम्न मूल्य उप पकड में महाचिंगटों के वर्ग में किशोर अवस्था के *पेट्रार्क्टस रुगोसस* और *थीनस ओरियन्टालिस* पाये जाते हैं।

मृदुकवची जानवर

गास्ट्रोपोड (52.5%), सेफालोपोड (38.6%) और बैवाल्व या सीपी (8.8%) निम्न मूल्य उप पकड में शामिल होते हैं। इसमें प्राप्त गास्ट्रोपोड की मुख्य जातियाँ है - *बाबिलोनिया स्पैरेटा और बुर्सा स्पैनोसा*। सेफालोपोड की मुख्य जातियाँ है - *लोलिगो*, *सेपिया इनार्मिस* और *एस. डुवासेली*, बैवाल्व की श्रृंखला में माक्ट्रा अधिकतर दिखाया पडता है।

सम्प्रति, हर एक किलो निम्न मूल्य उप पकड को 5-15 रु. के मूल्य में बेचा जाता है। यथार्थ में सारे निम्न मूल्य उप पकड का इस्तेमाल या उपयोग किया जा रहा है - या तो स्थानीय मानव उपभोग के लिए (सुखाकर या ताजा) या मछली खाद्य कारखाने में कच्चे पदार्थ के रूप में। यह पशु-खाद्य और खाद के लिए उपयोग किया जाता है। यह अंश उन जातियों से बना होता है, जो मानव उपयोग के लिए ताजा रूप में अवतरित नहीं होता, या जो वाणिज्य प्रधान नहीं है। अधिकतर निम्न मूल्य उप पकड बर्फ में न रखने का कारण, मछली खाद्य कारखाने में ही उपयुक्त होता है। बहुदिनीय मात्स्यिकी में इसका संग्रह और परिरक्षण आवश्यक है। लेकिन ज्यादातर जलयानों में ये सुविधाएँ नहीं होती। अग्रिम चरण के रद्दी मछलियाँ (जो मछली कारखाने में उपयोग किया जाता है) को 4-5 रु. प्रति किलो के मूल्य में बेचा जाता है। अक्षुण्ण और काफी बडे नमूनों को मछुआरे अलग करके बाजार में नामिक मूल्य में व्यापार करते हैं। निम्न मूल्य उप पकड के कुछ मछलियों को सुखाकर स्थानीय बाजार में प्रति किलो रु. 8-15 रु. में बेचा जाता है। एकमात्र जाति, जैसे रिब्बण फिश और एंचेवीस के सूखे उत्पादन प्रति किलो 100 और 80 रु. में क्रमशः बिकता है।

मुख्य शब्द/Keywords
महाजाल - trawl net
उप पकड (कम बाज़ार भाव की निचली कोटि मछलियाँ) - bye catch
मृदुकवची जानवर - molluscans
पकड आकार तक न बढ़ी मछलियों के मत्स्यन से विकास में होनेवाली बाधा - growth overfishing
महाचिंगट - lobster